वीतराग शासन जवन्त हो

श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक विधान माण्डला

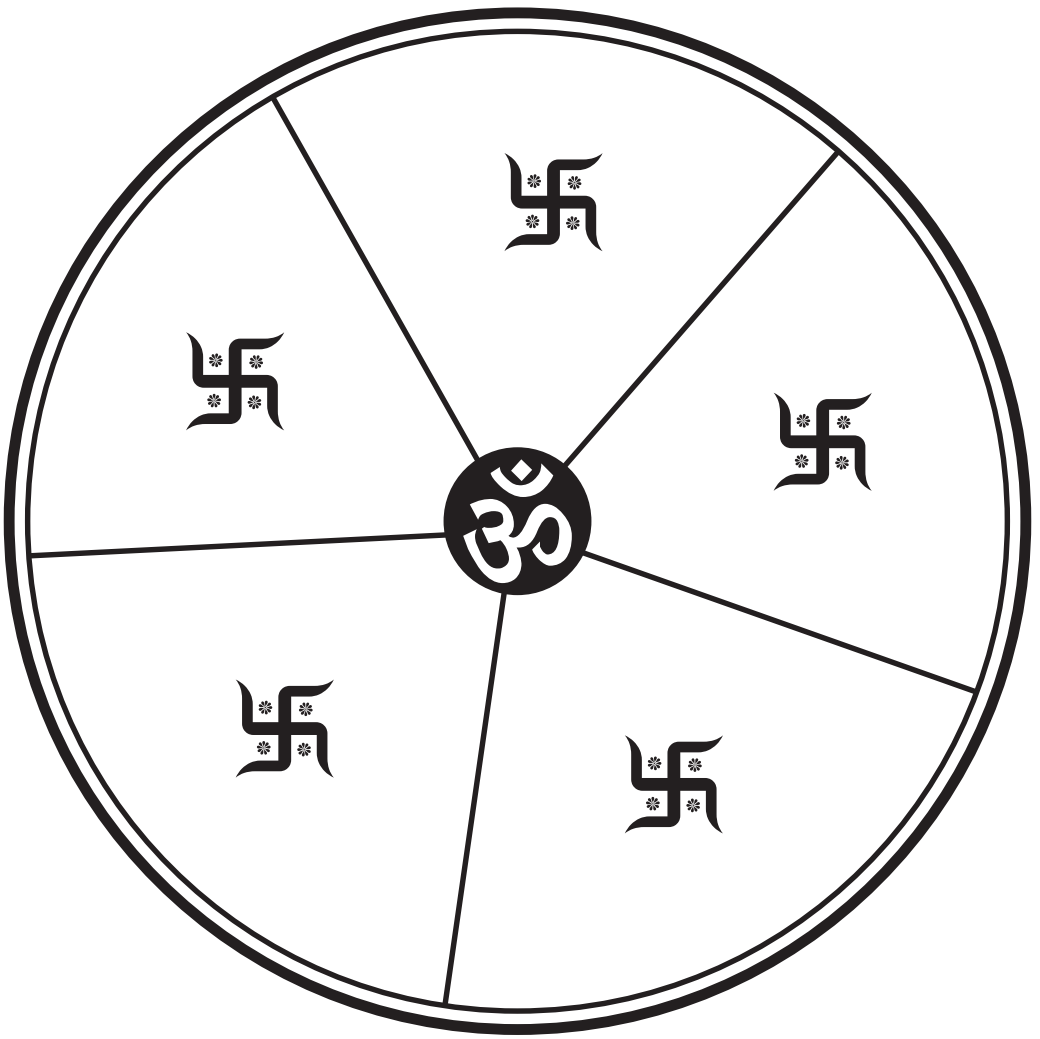

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक विधान
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम 2023, प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया – मो.: 7568840873
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085 ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425 ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, दिल्ली मो.: 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक :

विनय पाठ (लघु) (दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।
मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।। ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।। ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।। ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।। ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

''पूजा प्रतिज्ञा पाठ''

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान !
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

''स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

''परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिनः, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्दः)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

(दोहा)

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस-छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।

दोहा - अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्दः)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा – जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर है मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा – सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री .....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर,

नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इष्ट प्रार्थना

तर्ज – भावना दिन रात मेरी.....

भावना भगवान मेरी, यह सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील धर, हर जीव का उद्धार हो।। टेक।।
पाप का परिहार होवे, धर्म का प्रचार हो।
वीर वाणी का सतत्, व्यवहार घर-घर बार हो।।
सप्त व्यसन का जहाँ से, हे प्रभू जी ह्रास हो।
शान्ति वा आनन्द का, हर जीव के उर वास हो।।
देव गुरु वाणी में हर इक, जीव का विश्वास हो।
हर बुराई का जहाँ से, पूर्णतः अब नाश हो।।
खेद अरु भय शोक हे जिन !, जीव के सब दूर हों।
सौख्य शांती से सभी जन, पूर्णतः भरपूर हों।।
संत श्रावक के हृदय से, मद सदा चकचूर हो।
हो 'विशद' धर्मात्मा हर, नूर का भी नूर हो।।

दोहा – भाए जो यह भावना, मन में श्रद्धा धार।
अल्प काल में जीव वह, हो जाए भव पार।।

श्री शांतिनाथ स्तोत्र (भुजंग प्रयात छन्द)

(तर्ज – नरेन्द्र शतेन्द्र सु पूजे...)

नरेन्द्र फणेन्द्रादि ध्यायें शतेन्द्रं, महिमा गणेन्द्रादि गाएँ महेन्द्रं।
श्री शांति जिन को जो शांति से ध्याएँ, प्राणी विशद सौख्य शांती वे पाएँ।।
छवि वीतरागी है सर्वस्य त्यागी, मनोहारी मुद्रा परम वीतरागी।
प्रभु को दुखी दुःख में जो भी ध्याएँ, अति शीघ्र मुक्ती दुखों से पाएँ।।1।।
हम भटके जगत में प्रभु वे सहारा, है अज्ञान का तम न सूझे किनारा।
नहीं जान पाए प्रभू तेरी माया, अतः जग में भटके नहीं पार पाया।।
फँसे राग में द्वेष ने भी सताया, सतत मोह ने जाल में जो फँसाया।
जले क्रोध अग्नी में समता न पाये, शिला मान की हम नहीं तोड़ पाए।।2।।
किए भक्ति प्रभु की सभी रोग जाएँ, नही भूत प्रेमादि बाधा सताएँ।
त्रिलोकी पति सब दुखों से बचाते, सभी संकटों को प्रभु जी हटाते।।
प्रभु भक्ति कर शक्ति निज की जगाएँ, बढ़े पुण्य सारी टलें अपदाएँ।
विशद मंत्र है नाम प्रभु जी तुम्हारा, बने जिन्दगी में हमारे सहारा।।3।।
सभी मंगलों में हो मंगल जिनेश, सभी उत्तमों में हो उत्तम विशेषं।
हैं अशरण शरण जिन प्रभु जी हमारे, प्रभु लोक में हो तुम चंदा सितारे।।
तुम्ही माता पिता हो हमारे, तुम्ही मित्र भ्राता हो जीवन सहारे।
जो श्रद्धा के फूलों से जिनवर को ध्याएँ, महा सम्पदा के वे स्वामी कहाएँ।।4।।

दोहा–'विशद' शांति के कोष जिन, परं शांति दातार।
चरण पड़े हम आपके, बोले जय जयकार।।

श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजन विधान

स्थापना

हे शांतिनाथ करुणा निधान, महिमा महान गुण के धारी।
हे अष्ट कर्म नाशी जिनवर, केवलज्ञानी हे अविकारी।।
हे गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, कल्याणक पाँचों के धारी।
आह्वानन् करते निज उर में, हे शांति प्रदायक अघहारी।।
दोहा- आओ विराजो मम् हृदय, शांतिनाथ जिनराज।
आह्वानन करते प्रभो !, तीन योग से आज।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

कलशों में नीर यहाँ भरकर के लाए, जन्मादि रोग सभी हरने को आएँ।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

केसर में चन्दन ये सुरभित घिसाए, भवाताप हरने को आज यहाँ आए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज यहाँ हमने धुवाए, अक्षय सुपद प्राप्त करने को आए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व.स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित के थाल भराए, काम रोग हरने को जिन पद चढ़ाए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

सरस शुद्ध नैवेद्य हमने बनाए, क्षुधारोग नाश हेतु यहाँ आज लाए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

दीपक ये सुश्रुत के हमने जलाए, महामोह मिथ्यामल नाश हेतु आए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में धूप यहाँ हमने जलाई, मुक्ती की चाह मेरे मन में समायी।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ सुरभित सुफल हम ये लाए, महा मोक्षफल प्राप्त करने को आए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

द्रव्य आठ लेकर के अर्घ्य ये बनाए, पद अनर्घ्य पाने को यहाँ आज आए।
शांतिनाथ जिनवर की पूजा रचाते, चरणों में जिनवर के सिर ये झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – शांतीधारा के लिए, लाए पावन नीर।
देकर शांतीधार हम, पाने भव का तीर।।

(शान्तये शांतीधारा)

दोहा - पुष्पांजलि के हेतु यह, लाए पावन फूल।
विशद भावना है यही, पाएँ शिव का कूल।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।
जयमाला जिन शांति की, गाते महति महान।।

(चौपाई)

जय शांतिनाथ चिद्रूप राज, भव सिन्धू मे तारण जहाज।
जय पाप विनाशक हे जिनेश !, तुम आत्म हितंकर हो विशेष।।
जय कर्म निवारक रहे देव !, सुर-नर करते जिन चरण सेव।
जय गुण वारिधि जिन शांतिनाथ, सब विघ्न विनाशक रहे साथ।।1।।
जय भव-भय भंजक हे दिनेश !, तव वीतराग भय रहा भेष।
जय ऐरा माँ के रहे लाल, तुम काट रहे हो कर्म जाल।।
श्री विश्वसेन के तनुज आप, तव करता है जग नाम जाप।
जय सम्यक् दायक रहे आप, तव दर्शन से सब कटें पाप।।2।।
तुमने पाया है विशद ज्ञान, जिससे रोशन है ये जहान।
तुमने पाया पावन चरित्र, अतएव हुए प्रभु जी पवित्र।।
प्रभु ने सम्यक् तप लिया धार, यह जीवन पाया निर्विकार।
तुमने अपनाया मोक्ष पंथ, तुम मुक्ति रमा के बने कंत।।3।।
हो शिवपद दायक शांतिनाथ, पद चरण झुकाए भक्त माथ !।
भव-भव में पाएँ आप साथ, दो आशिष का हे प्रभो ! हाथ।

तुमने कषाय पर किया वार, सब रागद्वेष भी किए क्षार।
मन इन्द्रिय जेता परमवीर, हे मोह मदन जय महावीर !।।4।।

दोहा - कामदेव जिन बारवे, पंचम प्रभु चक्रेश।
पूज्य विशद हैं लोक मे, सोलहवें तीर्थेश।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - पूजा की है भाव से, चरणों धर अनुराग।
विशद भावना है यही, बुझे राग की आग।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री शांतिनाथ गर्भ कल्याणक पूजन

स्थापना

जन्म नगर की सुन्दर रचना, धन कुबेर करते हैं आन।
गर्भ पूर्व छह माह रत्न की, वृष्टी करता महति महान।।
जन्म समय तक रत्न बरसते, सोलह स्वप्न देखती मात।
तीन लोक हर्षित होता है, गर्भ में आते त्रिभुवन नाथ।।

दोहा- विश्वसेन ऐरावती, के सुत शांति जिनेश।
भादौं कृष्ण सप्तमी, पाए गर्भ विशेष।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

काल अनादी सागर तपते, वाष्प बने बादल बरसे।
देह शुद्ध न हुई आतमा, रत्नत्रय जल को तरसे।।
आत्म विशुद्धी हेतू जल ले, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

झुलश रहे हैं राग द्वेष से, कैसे हम बच पाऐंगे।
अगर बचाया तो चन्दन सम, हम शीतल हो जाऐंगे।।

जिन शासन की छाया पाने, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में ऐसे खोए जैसे, खोय मरुस्थल में हीरा।
भव सागर से हमें निकालो, बन जाए अक्षय हीरा।।
चेतन गुण अक्षय पानें को, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।3।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग इस जग के पाकर, शांति कभी भी मिली नहीं।
संयम तप के बिना किसी की, कली आत्म की खिली नहीं।।
विषय भोग का राग त्याग कर, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।4।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

भोजन पान किया सदियों से, भूख मिटी न तृप्त हुए।
मिटी ना आकांक्षा भोजन की, न निज में अनुरक्त हुए।।
क्षुधा मिटाकर निज रस पाने, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।5।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती में भटक रहे हैं, छाया मोह अंधेरा है।
अर्चा करते भक्ति भाव से, पाना ज्ञान सबेरा है।।
मोह हटाने दीप जलाकर, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।6।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्म जलाने धूप अनल में, सुरभित खेते हैं प्राणी।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा पावन, है जन-जन की कल्याणी।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।7।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्व.स्वाहा।

अरहंतों की वाणी द्वारा, सूत्र मिले हैं आगम के।
संवर और निर्जरा द्वारा, चखें मोक्ष फल आतम के।।
महामोक्ष फल पाने दुर्लभ, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।8।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्व.स्वाहा।

पाने वाले अष्टम वसुधा, अष्ट द्रव्य वे चढ़ा चुके।
अष्टम वसुधा पाने को हम, अष्ट द्रव्य ले चरण झुके।।
प्राप्त होय हमको अनर्घ्य पद, जिन अर्हन्तो को ध्यायें।
मुक्ती पद के राही बनकर, अनुपम शिव पदवी पायें।।9।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, भारत देश है महिमावान।
विश्वसेन ऐरादेवी थे, नगर हस्तिनापुर की शान।।
तीर्थ सिद्धि से चयकर आए, माँ के गर्भ में शांती कुमार।
शतैन्द्र रत्न वृष्टी करके, बोले प्रभु की जय जय कार।।

दोहा – भादों कृष्ण सप्तमी, गाए गर्भ कल्याण।
शांतिनाथ जिनराज का, करते हम यशगान।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – शांतिकारक शांति प्रभो !, कर दो शांती प्रदान।
जयमाला गाते विशद, दो हमको वरदान।।

(ताटंक छन्द)

यह आकाश अनन्त कहा है, जिसके मध्यलोक शुभकार।
उर्ध्व लोक है सप्त राजूका, अधो सप्त राजू विस्तार।।
सहस्र निन्यानवे योजन ऊपर, एक सहस योजन जड़वान।
द्वय लोकों के मध्य सुमेरु, मध्यलोक शुभ आभावान।।1।।
चित्र विचित्र रत्नों से निर्मित, चित्रा पृथ्वी रही महान।
सप्त क्षेत्र में रही विभाजित, जिनके मध्य कुलाचल मान।।
भरत क्षेत्र दक्षिण दिश में है, अतिशयकारी धनुषाकार।
छह खण्डों में रहा विभाजित, मध्य है आर्य खण्ड शुभकार।।2।।

भरत देश है जिसमें पावन, उत्तर प्रदेश है महिमावान।
मेरठ जिला हस्तिनापुर की, जग में रही निराली शान।।
विश्वसेन रानी ऐरावति, वंश इक्ष्वाकु रहा प्रधान।
धर्म परायण नगरी राजा भी, हुए जगत की अनुपम शान।।3।।
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर शुभ, रत्न वृष्टि करता शुभकार।
गर्भावतरण के पूर्व माह छह, अतिशयकारी मंगलकार।।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।
भादौ कृष्ण सप्तमी पावन, इन्द्र किए प्रभु का गुणगान।।4।।
गर्भ कल्याणक की पूजा शुभ, इन्द्रों ने की मंगलकार।
गर्भागम को पाकर सारा, हर्षित हुआ राज्य परिवार।।
गर्भ कल्याणक की पूजा कर, करते हम जिनका गुणगान।
'विशद' भावना भाते हैं प्रभु, हम भी पाएँ शिव सोपान।।5।।

दोहा – पूजा गर्भ कल्याण की, होती महिमावान।
सुर नर करते भाव से, पाने पुण्य निधान।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महामद में निमग्न हैं, जग के प्राणी।
उनको बोध प्रदायी है, श्री जिन की वाणी।।
प्रभु के पद में अर्पित है, पावन जलधारा।
पुष्पांजलि कर बोल रहे, प्रभु का जयकारा।।

।। शान्तये शांतिधारा ।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री शांतिनाथ जन्म कल्याणक पूजन

स्थापना

जन्मोत्सव होता है प्रभु का, तीन लोक में छाए हर्ष।
मेरू पे अभिषेक रचाते, इन्द्र सभी पाके उत्कर्ष।।
दश अतिशय के धारी होते, जन्म समय से ही भगवान।
जन्म कल्याणक की पूजा कर, देव करें अतिशय गुणगान।।

दोहा- ज्येष्ठ कृष्ण शुभ चतुर्दशी, शांतिनाथ भगवान।
गर्भागम को पूर्ण कर, पाए जन्म कल्याण।।

ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात छन्द) (नरेन्द्र फणेन्द्र...)

भ्रमण भव कहानी, तुम्हे क्या सुनाए।
चढ़ा नीर चरणों, जरादिक नशाएँ।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं नि.स्वाहा।

प्रभो ! क्रोध की आग, हमको जलाए।
चढ़ाए सुचन्दन, प्रभो ! शान्ति पाए।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चंदनं नि.स्वाहा।

सहे कष्ट सदियों से, हमने घनेरे।
सुपद प्राप्त अक्षय हो, हे देव ! मेरे।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं नि.स्वाहा।

विशद शील को शूल, सम जाना भाई।
नहीं शुद्धि आतम की, हमने जो पाई।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।4।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं नि.स्वाहा।

प्रभो ! श्रेष्ठ व्यंजन हम, सदियों से खाए।
नहीं तृप्ति पाई, अतः दर पे लाए।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।5।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं नि.स्वाहा।

महा मोह तम के हैं, भारी अंधेरे।
जला ज्ञान दीपक, कटें बन्ध घनेरे।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।6।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं नि.स्वाहा।

उड़े हंस चेतन, उड़ेगा अकेला।
रहे कर्म का जीव, के सब झमेला।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।7।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं नि.स्वाहा।

सुफल मोक्ष पाने को, दर पे हम आए।
चढ़ाने को फल श्रेष्ठ, ताजे ये लाए।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।8।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं नि.स्वाहा।

सभी दर पे घूमे, ना पाया ठिकाना।
चढ़ा अर्घ्य चरणों, विशद मोक्ष पाना।।
प्रभो ! शांति देवा, हरो दुख हमारे।
खड़े हम शरण में, प्रभू जी तुम्हारे।।9।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा- शांती धारा दे रहे, नाथ ! आपके द्वार।
यही भावना है विशद, मिटे भ्रमण संसार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते चरण, भक्ति भाव के साथ।
मुक्ती पाए शीघ्र ही, हे त्रिभुवन के नाथ !।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

पूर्णार्घ्य

पूर्व भवों में किए साधना, विशद भाव से अनुपम घोर।
तीर्थंकर प्रकृति जो बाँधी, मन को करती भाव विभोर।।
जिसके फल से पाया प्रभु ने, मंगल कारी जन्मकल्याण।
देव किए अभिषेक मेरु पे, करते हम जिनका यशगान।।

दोहा- ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, पाए जन्म कल्याण।
नगर हस्तिनापुर हुआ, जग में महिमावान।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अर्चा कर जिनराज की, कटे कर्म का जाल।
सुख शांती सौभाग्य हो, वन्दन करें त्रिकाल।।

(छन्द)

जिनके चरणाम्बुज की रज पा, पाप ताप नश जाता है।
ध्यान करें जो भाव सहित, वह शिव पदवी को पाता है।।
सुर असुर आपके चरणों, में नित अपना ध्यान लगाते हैं।
गणधर योगी ज्ञानी ध्यानी, गुणगान आपका गाते हैं।।1।।
प्रभु गर्भ वास में रहते ज्यों, शुभ रत्न पेटिका में सोहें।
न उदर वृद्धि हो माता की, आभा से जन-जन को मोहें।।
नित अष्ट देवियाँ माता के शुभ, गर्भ का शोधन करती हैं।
छप्पन कुमारिकाएँ आके, सन्ताप शाप को हरती हैं।।2।।

प्रभु ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, जन्म सुमंगलमय पाया।
स्वर्गों में घंटा नाद हुआ, भूतल सारा ही हर्षाया।।
सौधर्म इन्द्रा ऐरावत ले, तब नगर हस्तिनापुर आया।
शचि ने बालक को लिया हाथ, मायामय बालक पधराया।।3।।
सौधर्म इन्द्र ऐरावत पर, लेकर सुमेरु पर जाता है।
जो पाण्डु शिला पर हर्षित हो, प्रभु का अभिषेक कराता है।।
सौधर्म इन्द्र ने दाँये पग में, मृग चिह्न देखकर नाम दिया।
जय शांतिनाथ जय शांतिनाथ, श्री शांतिनाथ जयकार किया।।4।।
फिर शचि ने चन्दन चर्चित कर, बालक का शुभ श्रृंगार किया।
चरणों में वन्दन किया विशद, फिर बालक को निज गोद लिया।।
तव नृत्य गानकर इन्द्र सभी, फिर नगर हस्तिनापुर आये।
खग इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र सभी, जन्मोत्सव करके हर्षाए।।5।।

दोहा- पूजा जन्म कल्याण की, करें इन्द्र परिवार।
महिमा गाके आज हम, करते जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-पूजा शांतीनाथ की, शांती करें प्रदान।
अतः भाव से यहाँ किया, श्री जिन का गुणगान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री शांतिनाथ तप कल्याणक की पूजा

स्थापना

जाति स्मरण पाकर प्रभु जी, धारण किए हृदय वैराग्य।
धन धान्यादिक परिजन त्यागे, जागे स्वयं प्रभू के भाग्य।।
रत्नत्रय के धारी होकर, दीक्षा धारण किए जिनेश।
पंच महाव्रत समिति गुप्तिधर, संयम धारी हुए विशेष।।

दोहा- चतुर्दशी वदि ज्येष्ठ की, पाए तप कल्याण।
भव का भ्रमण विनाश कर, पाए शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(विष्णुपद छन्द)

कंचन सा जल का रूप, आतम का सोहे।
निर्मल है सिद्ध स्वरूप, सब का मन मोहे।।
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।1।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलता तपता संसार, शीतल क्या जग में।
जिन तरु हैं छायादार, हम है प्रभु पग में।।

श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।2।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सिन्धू सार अपार, कौन खिवैय्या है।
तुम तारण तरण जहाज, तव पद नैय्या है।।
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं पुष्प सुगन्धीवान चेतन महकाएँ।
हम निज चेतन की गंध, पाके शिव पाएँ
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।4।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का पाने स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करते याद, जिन के चरण पड़े।।
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।5।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग रहा मोह से व्याप्त, जीते कौन बली।
अंतर ज्योति हो प्राप्त, भागे मोह खली।।
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।6।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जले जले न कर्म, जो दुर्गन्धित है।
जल जाएँ धूप से कर्म, धर्मी वन्दित है।।
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।7।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल निष्फल देते रोग, जिससे जग रोऐ।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोए।।
श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।8।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुख की करते चाह, किन्तू दाह जगे।
पां जाएँ सच्ची राह, निज का मोह भगे।।

श्री शांतिनाथ जिनराज, उत्तम तप धारें।
हम पाने शांति प्रधान, बोलें जयकारे।।9।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

मोक्ष मार्ग के राही जिनवर, पाएँ पावन तप कल्याण।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र के, धारी गुण रत्नों की खान।।
पंच महाव्रत समीति गुप्तियाँ, तेरह विध पालें चारित्र।
मोक्ष मार्ग के धारी जिन की, अर्चा करते परम पवित्र।।

दोहा- शांतिनाथ जिनवर परं, किए सुतप घनघोर।
किए कर्म की निर्जरा, बढ़े मोक्ष की ओर।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ वदी चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- महिमा गाने आपकी, हुए आज वाचाल।
शांतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

श्री शांतिनाथ की पूजा से, जीवों को शांती मिलती है।
जो श्रद्धा भक्ती हृदय धरें, तो ज्ञान रोशनी खिलती है।।

प्रभू पूर्व भवों में भी तुमने, सद् संयम को अपनाया था।
सर्वार्थ सिद्धि के सुख भोगे, ये पुण्य का ही फल पाया था।।1।।
तैंतिस सागर की आयुपूर्ण, करके तुमने अवतार लिया।
श्री हस्तिनागपुर में माता, ऐरादेवी को धन्य किया।।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदश अनुपम, बालक ने भूपर जन्म लिया।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया।।2।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पोंछ दिया।।
दाँये पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो सब मिलकर जयकारा।।3।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया।।
फिर शांतिराज भी हुए विशद, श्री कामदेव त्रय पद के धारी।
बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी।।4।।
छह खण्ड राज्य का भोग किया, पर योग मयी न हो पाए।
भोगों से भोगे गये स्वयं, पर भोग पूर्ण न जो गाए।।
यह सोच हृदय में आने से, वैराग्य भाव मन में आया।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया।।5।।
फिर ध्यान अग्नि से कर्म चार, प्रभु कर्म घातिया नाश किए।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश किए।।

श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवे जग में कहलाए।
प्रभु समवशरण उपदेश दिए, तब सुनने भव्य जीव आए।।6।।
वह श्रद्धा ज्ञानावरण प्राप्त, कर मोक्ष मार्ग को अपनाए।
पूजा भक्ती कर भाव सहित, श्री जिनवर की महिमा गाए।।
फिर ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश को, प्रभु कर्म अघाती नाश किए।
श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए।।7।।
प्रभु की महिमा जग में अनुपम, जिसका कोई और न छोर कहीं।
शांती का दाता अवनी पर, हे नाथ! आप सम कोई नहीं।।
भक्ति से मुक्ती मिलती है, यह आज समझ में आया है।
जीवन का पाया राज अहा, जब से तव दर्शन पाया है।।8।।
श्री शांतिनाथ की पूजा कर, कई लोगों ने फल पाया है।
दुखियों के दुख नश गये पूर्ण, उनने सौभाग्य जगाया है।।
हम पूजा करने हेतु विशद, यह द्रव्य मनोहर लाए हैं।
दो मुक्ति हमे भव सागर से, यह फल पाने को आए हैं।।9।।

दोहा- कामदेव चक्रेश अरू, जिन तीर्थेश महान।
तीन-तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांतिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शान्ति जिन के नाम का, करो 'विशद' तुम जाप।
चरण कमल की भक्ति से, कट जायेंगे पाप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री शांतिनाथ केवलज्ञान कल्याणक पूजा

स्थापना

भेद ज्ञानकर आत्म ध्यानरत, कर्म घातिया करें विनाश।
कर्मावरण नष्ट होते ही, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।
अनन्त चतुष्टय प्रातिहार्य दश, अतिशय होवें पाते ज्ञान।
समवशरण में अधर विराजें, दिव्य देशना दें भगवान।।

दोहा- दशमी शुक्ला पौष की, पाए केवलज्ञान।
दुखियों के दुख मैटकर, किए जगत कल्याण।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

चारों गति में भटक रहे हैं, पलभर शांति न पाई है।
जिन विषयों को सुख समझा वह, घोर नरक की खाई है।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जला रही विषयों की ज्वाला, भवाताप से जलते हैं।
हम अज्ञान तिमिर में भटके, कर्म मेरे न गलते हैं।।

शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खोटी इच्छाओं ने मेरा, मन मैला कर डाला है।
महामोह तम ने आतम को, किया हमेशा काला है।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग की ज्वाला जलकर, क्षण-क्षण हमे जलाती है।
शांत करें हम जितना उसको, नित प्रति बढ़ती जाती है।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित हो हम, चारों गति में भटकाए।
भाँति-भाँति के व्यंजन खा भी, तृप्त नहीं हम हो पाए।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगा नहीं उपमान ज्ञान का, उसे जगाने आए हैं।
नाश हेतु हम मिथ्यातम के, दीप जलाकर लाए हैं।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भूल के निज चेतन की शक्ती, जग व्यापारों में खोऐ।
मोहित होके विषय भोग में, बीज कर्म का ही बोए।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गति के भाजन बनते जो, अशुभ भाव के फल खाते।
संयम को धारण करते जो, वे स्वर्गापवर्ग पाते।।
शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पद जो हैं तीन लोक में, पाकर वे हम हर्षाए।
पर पद सारे त्याग यहाँ पर, निज पद पाने को आए।।

शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, प्राप्त किए हैं केवलज्ञान।
विशद ज्ञान पाने को हम भी, करते हैं अतिशय गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

कर्म घातिया नाशी जिनवर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
सर्व चराचर के ज्ञाता जिन, होते जग में महिमावान।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि पालें चारित्र।
मोक्ष मार्ग के धारी जिन की, अर्चा करते परम पवित्र।।

दोहा- ध्यान लगाए आत्म का, पाए केवलज्ञान।
महिमा गाते हम 'विशद', पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शांति प्रदायक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।1।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशदज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारितवान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।।2।।

जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्मकल्याण नमस्ते।।3।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।4।।
जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।5।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।6।।
एकानेक स्वरूप नमस्ते, चिन्तामणि चिद्रूप नमस्ते।
नाना भाषा वान नमस्ते, गुण के आप निधान नमस्ते।।7।।
आशापास विहीन नमस्ते, आत्म स्वरूप सु लीन नमस्ते।
कुल क्रम कारि जिनेन्द्र नमस्ते, धीर वीर भुवनेन्द्र नमस्ते।।8।।
भक्त पूजते आन नमस्ते, करते हैं गुणगान नमस्ते।
विशद सिन्धु आचार्य नमस्ते, पूजा का शुभ कार्य नमस्ते।।9।।
करवाएँ शुभकार नमस्ते, किए बड़ा उपकार नमस्ते।
प्राप्त होय सद् ज्ञान नमस्ते, पा जाएँ निर्वाण नमस्ते।।10।।

दोहा- शांती के हैं कोष जिन, शांती के आधार।
'विशद' शांति पाए स्वयं, करो प्रभू उद्धार।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांति पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो !, बोलें जय जय कार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री शांतिनाथ मोक्ष कल्याणक की पूजा

स्थापना

आयु कर्म का अन्त प्राप्त कर, कर्म अघाती करें विनाश।
एक समय में ऊर्ध्व गमन कर, सिद्ध शिला पर करते वास।।
सुखानन्त को पाने वाले, शास्वत् गुण प्रगटाएँ विशेष।
नित्य निरंजन अविनाशी पद, में रमते हैं स्वयं जिनेश।।

दोहा- चतुर्दशी वदि ज्येष्ठ की, पाएँ पद निर्वाण।
शांतिनाथ भगवान का, करता जग गुणगान।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज - दिन रात मेरे स्वामी)

यह नीर छानकर के, प्रासुक उसे कराऊँ।
जन्मादिक रोग हरने, मैं नीर यह चढ़ाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर के साथ चन्दन, गौसीर में घिसाऊँ।
भव ताप नाश करने, चन्दन चरण चढ़ाऊँ।।

पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल ये अनुपम, अक्षय सुपद प्रदायी।
अक्षय सुपद को पाने, अक्षत यहाँ चढ़ाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुमन मनोहर, शुभ काल में भराऊँ।
निज कर्म रोग हरने, चरणों विशद चढाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य मिष्ठ अनुपम, ताजे सरस बनाऊँ।
क्षुधा रोग है अनादी, वह रोग अब नसाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौ घृत का दीप पावन, शुभ रत्न मय सजाऊँ।
मोहान्धकार नाशी, जिनके चरण चढ़ाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्व.स्वाहा।

दश गंध ले हुतासन, के माहि मैं जलाऊ।
आठों करम नशाने, जिनराज पद चढ़ाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्व.स्वाहा।

फल पक्व शुभ मनोहर, ताजे सरस चढ़ाऊँ।
फल मोक्ष प्राप्त करके, मुक्ती महल में जाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्व.स्वाहा।

ले अष्ट द्रव्य पावन, शुभ अर्घ्य मैं बनाऊँ।
पाने अनर्घ्य पदवी, त्रय योग से चढ़ाऊँ।।
पूजा प्रभू की अनुपम, त्रय योग से रचाऊँ।
शुभ पुण्य योग पाके, मुक्ती महल को जाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने हेतु हम, देते शांतीधार।
यही भावना है विशद, मिटे भ्रमण संसार।।

(शान्तये शांतीधारा)

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।
विशद भाव से हम करें, श्री जिन का यश गान।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूर्णार्घ्यं

तीर्थं प्रकृति के बन्धक, पावे गर्भ जन्म कल्याण।
रत्नत्रय के धारी होकर, करते निज आतम का ध्यान।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध पालें चारित्र।
मोक्ष मार्ग के धारी जिनकी, अर्चा करते परम पवित्र।।

दोहा- कर्म नाश करके प्रभू, पाए मोक्ष कल्याण।
जिन अर्चा करके 'विशद', पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - शांति नाथ भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(चौपाई)

शान्ति नाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जो हैं जन-जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चयकर आये, हस्तिनागपुर धन्य बनाए।
हुई रत्न वृष्टी शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी।।2।।
इन्द्रराज ऐरावत लाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, सबने भारी हर्ष मनाया।।3।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवलज्ञान जगाया।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।।4।।
बुध ग्रह की बाधा जब आवे, नाना विध के कष्ट दिलावे।
हँसी खुशी में गम आ जाए, भय आकस्मिक उसे सतावे।।5।।
कारोबार मंद पड़ जावे, बार-बार घाटा लग जावे।
श्रम सारा निष्फल हो जावे, दुख पे दुख अति बढ़ता जावे।।6।।
रात दिवस ये चिन्ता लागे, प्रभु भक्ती में मन न लागे।
बन्धू बान्धवाभी मुख मोड़ें, सुत दारा भी रिश्ता छोड़ें।।7।।
भूख प्यास निद्रा नहिं आवे, कैसे दुख की घड़ियाँ जावें।
पाप कर्म की लीला न्यारी, कभी रोग कभी हाहाकारी।।8।।
मस्तक पीड़ा सर्दी खाँसी, होता मति भ्रम सर्व विनाशी।
भक्ति प्रभु की शांति दिलाती, रोग शोक संकट मिटवाती।।9।।
यह विधान जो भक्त रचावें, ग्रह अनुकूल सभी हो जावें।
सुख सम्पत्त गुण यश के दानी, नव निधि चौदह रत्न प्रदानी।।10।।
दीन दरिद्री धन पा जाये, पुत्र हीन सुखकर सुत पाये।
अल्प बुद्धि ज्ञानी बन जाये, रोगी रोग नशे सुख पाये।।11।।

सर्व क्लेश अघ संकट हर्त्ता, शांतिनाथ सब सुख के भर्त्ता।
नाथ ! निरंजन तारण हारे, हम सब के प्रभु आप सहारे।।12।।
मोक्ष महल जब तक ना पाएँ, तब तक तुमको हृदय बसाएँ।
'विशद' भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी !।।13।।

दोहा –नाथ ! आपकी भक्ति से, भक्त बने भगवान।
अतः भाव से नित करें, भक्ती सहित गुणगान।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – श्रद्धा के शुभ पुष्प यह, अर्पित हैं भगवान।
मुक्ती हो संसार से, पाना पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं पंचकल्याणक पदालंकृत श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- शांतिनाथ भगवान हैं, शांती के दातार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भवदधि पार।।

''पद्धड़ि छन्द''

जय-जय वन्दौं श्री शांतिनाथ, जिन सुपद झुकावें इन्द्र माथ।
छह माह पूर्व नगरी प्रधान, सुर इन्द्र रचे आके महान।।
शुभ कोट रचाए वहाँ तीन, शिल्पी इन्द्रादिक थे प्रवीण।
सर्वार्थ सिद्धि चयकर विमान, जिन माता के प्रभु गर्भ आन।।1।।

जय हस्तिनागपुर जन्म लीन, जय तीन लोक उद्योतकीन।
पितु विश्वसेन जिनके महान, माँ ऐरादेवी जग प्रधान।।
जन्मे जिनके गृह में जिनेश, तव हर्ष मनाए सुर अशेष।
ऐरावत लाया इन्द्र देव, जो किया चरण की विनत सेव।।2।।
जो पाण्डुक वन अभिषेक कीन, करके परिक्रमा विशद तीन।
मृग चिन्ह देख करके सुरेश, जो नाम दिया शांति जिनेश।।
चक्री तीर्थंकर काम देव, त्रय पद के धारी हुए एव।
इक लाख वर्ष की आयु जान, चालीस धनुष ऊँचे महान।।3।।
शुभ जाति स्मरण कर विशेष, वैराग्य जगाए तव जिनेश।
प्रभु होकर के जग से उदास, अनुप्रेक्षा चिन्तन किए खास।।
मुनिवर की दीक्षा लिए धार, तव ध्यान लगाए निर्विकार।
फिर कर्म घातिया आप नाश, केवल्य ज्ञान कीन्हे प्रकाश।।4।।
तब इन्द्राज्ञा पाके धनेष, कर समवशरण रचना विशेष।
तब त्रय गतियों के जीव आन, दिव्य ध्वनि सुनते हैं प्रधान।।
प्रभु कर्म अघाती कर विनाश, फिर सिद्ध शिला में करें वास।
जय-जय जयश्री शांतिनाथ, तव चरण झुकाए विशद माथ।।5।।

दोहा - शांतिनाथ के द्वार पर, होती पूरी आस।
पूरी होगी कामना, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - अर्चा करते आपकी, हे जिनवर! तीर्थेश।
गुण गाते हम भाव से, चरणों यहाँ विशेष।।

।। इत्याशीर्वाद।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

आरती

(तर्ज - वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्...)

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की।।
वन्दे जिनवरम-वन्दे जिनवरम्,
वन्दे जिन धरम-वन्दे जिनधरम।। टेक।।

नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए थे-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए थे-2
द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।
जगमग-जगमग...।। 1।।

जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी-2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी-2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की।
जगमग-जगमग...।। 2।।

हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं-2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं-2
महिमा गाई है संतों न, वीतराग विज्ञान की।
जगमग-जगमग...।। 3।।

शांतिनाथ जी भवि जीवों को, अतिशय शांती प्रदान करें।
शांती पाते हैं वे प्राणी, जो प्रभु का गुणगान करें।।